मीरां के भीतर से मीरां की पहचान

दुर्गाप्रसाद अग्रवाल

अगर छायावाद की तर्ज पर मध्यकाल के चार आधार स्तंभ तलाश किये जाये तो निस्संदेह वे होंगे – तुलसी, सूर, कबीर और मीरां. ये चारों ही कवि जन मानस में अत्यधिक लोकप्रिय हैं, हालांकि इन सबकी लोकप्रियता एक ही तरह की नहीं है. इन चारों में से मीरां के संदर्भ में यह एक असुविधाजनक सच्चाई है कि उनके बारे में जितना ज्ञात है, उससे अधिक अज्ञात है. और जो ज्ञात है, वह भी प्रमाण-पुष्ट कम, मनचीता अधिक है. जाकी रही भावना जैसी प्रभु-मूरत देखी तिन तैसी वाली बात जितनी मीरां के संदर्भ में सही ठहरती है उतनी शायद ही किसी अन्य भक्त कवि के बारे में ठहरती हो. लंबे समय से मीरां को जानने-समझने की कोशिश में जुटे हिंदी के समर्थ आलोचक डॉ माधव हाड़ा जब यह कहते हैं कि "मीरां की कई छवियां चलन में हैं. यह इसलिए हुआ कि हमने अपने-अपने नजरिये को सही ठहराने के लिए अपनी-अपनी मीराएं गढ़ डालीं. इन नजरियों के अपने नाप-जोख और सांचे-खांचे हैं. इनकी जरूरतों के हिसाब से मीरां के जीवन से संबंधित जानकारियों में से या तो केवल कुछ चुनकर शेष दरकिनार कर दी गयी हैं या कुछ नई गढ़ ली गयी हैं" तो लगता है कि हम अब तक जिस तरह मीरां को जानते समझते रहे हैं, वह अपर्याप्त है और उसे नये सिरे से जाना-समझा जाना चाहिए.

पचरंग चोला पहर सखी री : मीरां का जीवन और समाज
डॉ माधव हाड़ा
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
प्रथम संस्करण, 2015. पृ. 166,
सजिल्द. मूल्य: 375.00

असल में यही विचार डॉ माधव हाड़ा की सद्य प्रकाशित किताब 'पचरंग चोला पहर सखी री' का प्रस्थान बिंदु भी है. यहां माधव हाड़ा का सारा जोर इस बात पर है कि अपने चश्मे उतार कर मीरां को देखा जाए और जैसी वे हैं, उसी रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत कर दिया जाये. अपनी मीरां की तलाश वे उसके समाज और उसके लोक के बीच से करते हैं. विभिन्न ऐतिहासिक साक्ष्यों को खंगाल कर और लोक के भाषा और उसके अनेक उपकरणों जैसे जनश्रुतियों, मिथों और ओखाणों आदि को सामने रखकर वे मीरां की जो छवि निर्मित करते हैं वह हमें चौंकाती भी है और अभिभूत भी करती है.

हम सब यही पढ़ते सुनते आये हैं कि मीरां तो विवाह-पूर्व ही भावुकतापूर्ण ईश्वरभक्ति में लीन युवती थी. (याद करें – 'माई री मैं तो लियो री गोविंदो मोल', और वे सारे किस्से जिनके अनुसार मीरां ने बचपन में ही कृष्ण को अपना पति मान लिया था), लेकिन प्राप्त प्रमाणों के हवाले से डॉ हाड़ा मीरां की इस छवि को नकारते हुये कहते हैं कि अगर मीरां ऐसी होती तो राणा सांगा अपने उत्तराधिकारी पुत्र के लिए उसका चुनाव कभी नहीं करता. वे पूछते हैं, "कलह, षड्यंत्र और दुरभिसंधियों के माहौल में वह मेवाड़ के भावी शासक के लिए केवल भक्ति भाव में डूबी रहने वाली पगली-दीवानी युवती का चयन कैसे कर सकता था?" और जब हम इस बात को याद करते हैं कि राणा सांगा कुशल योद्धा होने के साथ चतुर कूटनीतिज्ञ भी था, तो डॉ हाड़ा की बात से सहमत होना पड़ता है. तमाम साक्ष्यों के हवाले देते हुए डॉ हाड़ा बलपूर्वक यह बात कहते हैं कि मीरां पारंपरिक अर्थ में संत भक्त थी ही नहीं. वे एक सांसारिक स्त्री थी और और उसके जागतिक सरोकार बहुत व्यापक, मूर्त और सघन थे. हाड़ा इस बात का भी प्रत्याख्यान करते हैं कि मीरां भगवाधारी साध्वी या बैरागन थीं. उनका कहना है कि भले ही मीरां ने तीर्थयात्राएं और देशाटन किया और साधुओं के साथ भी उनका उठना-बैठना रहा, लेकिन साधु वेश उन्होंने कभी नहीं अपनाया.

अपनी बात की पुष्टि के लिए डॉ हाड़ा यह प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि संसार-विरक्त भक्त कवियों की तुलना में मीरां की कविता में मूर्त आग्रह बहुत हैं. वे कहते हैं कि "वैयक्तिक पहचान का आग्रह और सांसारिक संबंधों का द्वंद्व और तनाव संत-भक्तों की कविता में प्रायः नहीं मिलता, लेकिन मीरां की कविता में यह ध्यानाकर्षक ढंग से मौजूद है. संत-भक्त जन्मांतर व्यवस्था और कर्मफलवाद में विश्वास के कारण जागतिक व्यवस्था को सामंजस्यपूर्ण मानकर इससे असहमत नहीं होते, लेकिन मीरां की कविता में व्यवस्था का विरोध और उससे असंतोष चरम पर है." डॉ हाड़ा का यह तर्क उनकी बात को और अधिक वजनदार बनाता है कि मीरां की भाषा अन्य विरक्त संत भक्तों की भाषा की तुलना में ज्यादा लोकसंपृक्त और स्त्री लैंगिक है. डॉ हाड़ा बलपूर्वक यह भी कहते हैं कि मीरां का वैवाहिक जीवन सुखी था. यह पढ़ते हुए अगर आप भी मीरां के असंख्य पाठकों की तरह उनकी कविता में आये राणा से तनावपूर्ण संबंधों को याद कर रहे हों तो बता दूं कि डॉ हाड़ा के अनुसार यह राणा मीरां के पति नहीं, उनके देवर विक्रमादित्य हैं.

मीरां और अन्य भक्त कवियों के अब तक हुए अध्ययनों के संदर्भ में इस किताब की सबसे बड़ी खासियत यही है कि यहां अध्येता किसी पूर्व निर्मित धारणा का खंडन या मंडन करने की बजाय उपलब्ध प्रमाणों और साक्ष्यों की मदद से नयी छवि गढ़ने का सराहनीय किंतु चुनौतीपूर्ण प्रयास करता है. उसका बल मीरां के काव्य के विश्लेषण पर कम और उनके जीवन और समाज को समझने पर अधिक है, हालांकि इस किताब का एक पूरा अध्याय मीरां के काव्य पर भी केंद्रित है. किताब का एक महत्वपूर्ण अध्याय मीरां के छवि निर्माण पर है. इस अध्याय में कदाचित पहली बार जन संचार एवं अन्य माध्यमों में प्रचलित मीरां की छवि का गहन और तर्कपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है.

इस किताब की विषय वस्तु जितनी मौलिक है, भाषा-शैली भी उतनी ही अनूठी है. हिंदी आलोचना की आम तौर पर ठोस और ठस भाषा शैली और बोझिल प्रस्तुति से हटकर यह किताब सहज बोलचाल की भाषा में, दोस्ताना और आत्मीय लहजे में, बिना किसी पारिभाषिक शब्दावली का आतंक पैदा किये जब अपनी बात कहती है तो आपको लगता ही नहीं कि आप कथेतर गद्य की, बल्कि आलोचना की कोई किताब पढ़ रहे हैं. उपन्यास की-सी रोचकता और किताब के लेखों का पूर्वापर संबंध से लगभग मुक्त होना इसे एक अनूठा स्वाद प्रदान करते हैं. इस किताब को जितना इसके नये नजरिये और मीरां की अभिनव छवि के लिए पढ़ा जाना चाहिए उतना ही इसके कल-कल बहते सहज-निर्मल गद्य के लिए भी. ■